पहेली नं० २

हरपुरमें एक वुढ़िया रहती थी। गांवके लोग वुधियाकी मां कहकर पुकारते थे। वुधिया लड़कीका नाम था। वह चरखा कातकर अपना अपनी लड़कोका भरण-पोषण करती थी। उसे वड़ा चिढ़ाते थे। और वह लड़कोंकी वातपर चिढ़तो भी खूब थी। जब वह पूनी चरखा कातने वैठती तब टोले महल्लेके लड़के सहित आकर उसे यह कहकर चिढ़ाने कि--

वुधियाकी माई, खाती है खटाई।
कात रही चरखा, गाय रही कड़खा॥

वस इतना कहना था कि वुढ़ियाका पारा एक-गरम हो जाता। वह लड़कोंके वाप दादोंके ले लेकर गालियां सुनाने लगती। लड़के पीट पीटकर खूब हंसते और उसे चिढ़ाते।

एक दिन तंग आकर बुढ़िया लड़कोंको आ
देख चरखा पूनी छोड़कर कहीं छिप गयी। लड़कों
ने उसे इधर-उधर बहुतेरा ढूंढ़ा पर वह मिल
नहीं। लड़के उसे न पाकर चले गये। पर तोभ
बुढ़िया वहीं पर बैठी रही। उस दिनसे बुढ़ि
चैनसे रहने लगी। न तो उसे लड़के चिढ़ाते
और न वह उन्हें गालियां देती थी। नीचेके चित्र
यही दृश्य दिखाया गया है। क्या तुम बतल
सकते हो कि बुढ़िया कहां छिपी बैठी है।
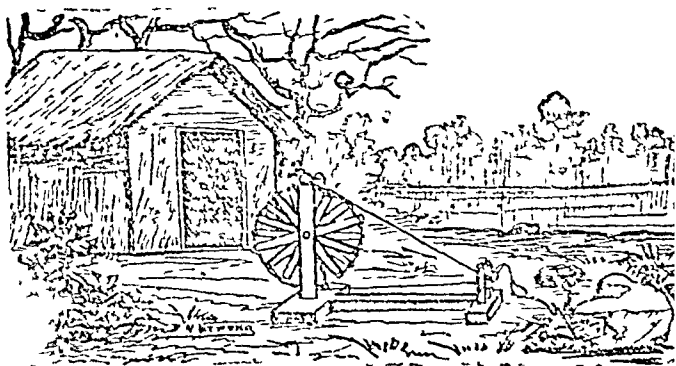
बताओ बुढ़िया कहां छिपी है ?

पहेली नं० ४

तुमने तो और कई तरहकी पहेलियां देखी होंगी। पर यह पहेली तुम्हारे लिये बिलकुल नयी है। नीचे २६ अक्षर दिये जाते हैं। इन अक्षरोंसे कई पशु-पक्षियोंके नाम बन सकते हैं। तुम अधिक से अधिक जितने पशु-पक्षियोंके नाम बना सकते हो बनाओ।

अक्षर

ड़ा लू ड़ हा गा तो मु घ चू धा ता ता त्ति मं
गैं गा ना थ वा चो गा कौ घो हा भा द ड़ा रा य

पहेली नं० ५

एक गांवमें एक बुढ़िया रहती थी। उसके एक लड़का था जिसका नाम मनोहर था। मनोहर बड़ा नटखट था। उसके मारे टोले महल्लेके लोग तंग आ गये थे। एक दिन मनोहर कई लड़कोंके साथ जंगलमें गाय चराने गया। दिनभर लड़के

पहेली नं० ६

तुम्हें नीचे कुछ वाक्योंके शब्द उलट-पुलटकर दिये जाते हैं। तुम उन शब्दोंको इस ढंगसे रखो कि उनसे एक-एक सार्थक वाक्य बन जाय। एक उदाहरणसे तुम इसे और स्पष्ट समझ जाओगे।

उदाहरण

है जन्म अधिकार स्वराज्य हमारा सिद्ध।

इन शब्दोंको उपयुक्त स्थानोंपर रखनेसे निम्नलिखित वाक्य बनता है—

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

बस, इसी तरह निम्नलिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ।

शब्द

१—कराते अच्छे अच्छे हैं काम विचार।

२—है यद्यपि फल तथापि है इसका धैर्य मीठा कड़वा होता।

३—दीनों दो हीको दान।

ऐसा बढ़िया मौका देखकर एक चोर पासके मकानमें सेंध मारनेकी ताकमें छिपकर बैठा है। तुम ऊंघते हुए सिपाहीका कान उमेठकर उसे बतला दो कि चोर कहां छिपा है?

पहेली नं० ८

शारदाप्रसाद नामका एक लड़का माडर्न हाई स्कूलकी आठवीं कक्षामें पढ़ता था। छठवीं कक्षा-तक तो उसने वैकल्पिक विषय (Optional) में संस्कृत ले रखी थी। पर और विषयमें तेज रहने पर भी संस्कृतमें उसके अच्छे नम्बर नहीं आते थे, धातुओंके रूप रटना उसके लिये बड़ा कठिन। किसी तरह वह छठवीं क्लासमें पास हो गया। सातवीं क्लासमें आकर उसने संस्कृत छोड़ दी और उसकी जगह ड्राइङ्ग ले ली।

आठवीं क्लासमें आनेपर वह अपनी क्लासके और लड़कोंसे डींग मारने लगा कि संस्कृत वाहियात सबजेक्ट है। उसके पढ़नेसे लड़कोंका दिमाग

खराब हो जाता है। छोड़ दो उसे और ड्राइङ्ग लो। ड्राइङ्ग बड़ा आसान विषय है। सौ में निन्या नवेसे कम नम्बर तो इसमें किसीके आते ही नहीं ड्राइङ्ग मास्टर साहब आंख बन्द करके मुझे १० में ९९ बड़े संकोचसे देते हैं। मेरा बनाया हुआ चित्र यदि तुम देखोगे तो वाह-वाह कहे बिना नहीं रहोगे। इसपर लड़कोंने कहा—अच्छा, हमलोग तुम्हारा इम्तहान लेंगे। यदि तुम हमारे इम्तहानमें पास हो जाओगे तो हमलोग संस्कृत छोड़कर ड्राइङ्ग ले लेंगे। जाओ, कल एक घोड़ेका चित्र बना लाओ। दूसरे दिन शारदाप्रसाद घोड़ेका चित्र बना लाया। उसके बनाये हुए चित्रको देखकर लड़के खूब हंसे और ताना मारते हुए कहने लगे—हां, भाई! क्या खूब! गज़बका चित्र है ऐसा घोड़ा तो शायद अरबमें भी न मिलता होगा

नीचे तुम जो चित्र देख रहे हो वह शारदा
सादके ही बनाये हुए चित्रकी नकल है। उसे
खकर तुम बतलाओ शारदाप्रसादने घोड़ेके चित्र
नानेमें कौन कौन-सी भूलें की हैं।

ताओ, इस चित्रमें चित्रकारने कौन-कौन सी भूलें की हैं?

पहेली नं० ६

बनारसकी बात है। वहांके भेलपुरा महल्लेमें
तीन कुंजड़िनें रहा करती थीं। सौदा बेचनेमें
तीनोंमें बड़ी होड़ रहती थी। एक दिनकी बात

गायब हो जाता है। और तो और ड्राइ-
ङ्ग लो। ड्राइङ्ग बड़ा आसान विषय है। गो मैं जित
नेमें कम नम्बर तो उसमें किसीके आते ही नहीं
ड्राइङ्ग मास्टर साहब आज कल मुझे १००
में ९८ नम्बर मंजूरीसे देते हैं। मेरा बनाया हुआ
चित्र यदि तुम देखोगे तो वाह-वाह करते रह न
रहोगे। इसपर लड़कोंने कहा—अच्छा, हमलो
तुम्हारा इम्तहान लेंगे। यदि तुम हमारे इम्तहान
पास हो जाओगे तो हमलोग गंगाजल छोड़कर
ड्राइङ्ग ले लेंगे। जाओ, कल एक घोड़ेका चित्र
बना लाओ। दूसरे दिन शारदाप्रसाद घोड़ेका चित्र
बना लाया। उसके बनाये हुए चित्रको देखकर
लड़के खूब हंसे और ताना मारते हुए कहने
लगे—हां, भाई! क्या खूब! गजबका चित्र है।
ऐसा घोड़ा तो शायद अरबमें भी न मिलता होगा।

नीचे तुम जो चित्र देख रहे हो वह शारद
[प्र]सादके ही बनाये हुए चित्रकी नकल है। उसे
[दे]खकर तुम बतलाओ शारदाप्रसादने घोड़के चित्र
[ब]नानेमें कौन कौन-सी भूलें की हैं।
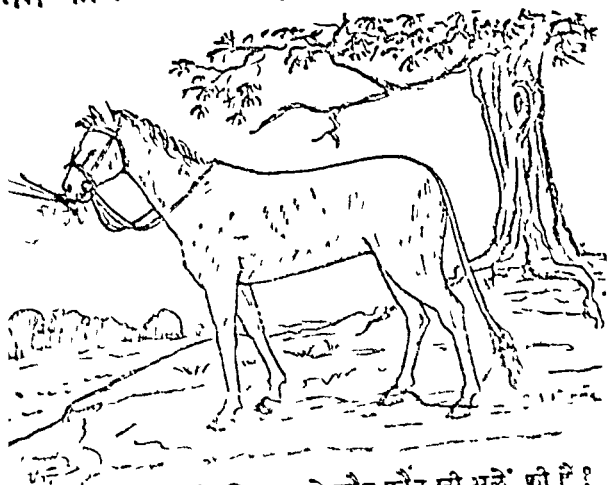
बताओ, इस चित्रमें चित्रकारने कौन कौन सी भूलें की हैं ?

पहेली नं० ६

बनारसकी बात है। वहांके भेलपुरा महल्लेमें
[त]ीन कुंजड़िनें रहा करती थीं। सौदा बेचनेमें
तीनोंमें बड़ी होड़ रहती थी। एक दिनकी बात

पहेली नं० ११

नीचेके चित्रमें चित्रकारने एक भूल की है, या तुम बतला सकते हो वह क्या है ? ध्यान-रहे वल एकसे अधिक भूल बतलानेवालेका उत्तर गलत मझा जायगा ।

चित्रकारने इस चित्रमें एक भूल की है, वह क्या है ? बताओ ।

पहेली नं० १३

नीचेके चित्रमें जहां [×] चिह्न बनाया गया है वहाँतक पहुंचनेका रास्ता ढूंढ़ निकालो ।
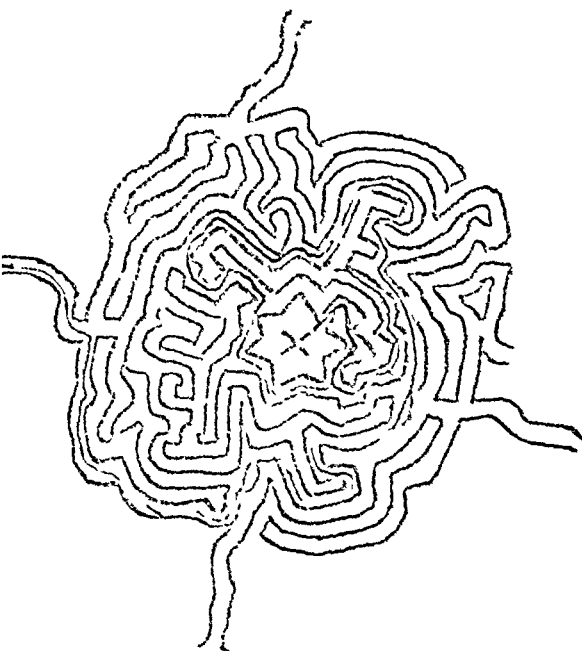
× इस चिह्नतक पहुंचनेका रास्ता ढूंढ निकालो ।

पहेली नं० १५

नीचे पचीस खानोंका एक चक्र है। इस चक्रकी पहली कतारके खानोंमें ४, २, ५, ३, १ ये पांच अङ्क रखे गये हैं। तुम इन्हीं पांच अंकोंको बाकी खानोंमें इस तरह उलट-पुलट कर रखो कि किसी भी ओरसे ऊपर, नीचे-कोना-कोनी पांच खानोंके अंकोंका जोड़ १५ हो।

४	२	५	३	१

पहेली नं० १५

नीचे पचीस खानोंका एकचक्र है। इस चक्रकी पहली कतारके खानोंमें ४, २, ५, ३, १ ये पांच अङ्क रखे गये हैं। तुम इन्हीं पांच अंकोंको बाकी खानोंमें इस तरह उलट-पुलट कर रखो कि किसी भी ओरसे ऊपर. नीचे-कोना-कोनी पांच खानोंके अंकोंका जोड़ १५ हो।

४	२	५	३	१

उनपर हमला किया। उसके हाथमें एक भयानक छूरा था। देखते ही बाबू साहब, उनके तीनों नोकर और दोनों कुत्ते डरके मारे जहांके तहां छिप गये। पर स्त्रीने साहससे गुण्डेके हाथसे छूरा छीन लिया और उसे मार भगाया। गुण्डेके भाग जानेपर उसने अपने पति और नोकरोंको बहुतेरा खोजा, पर वे अपनी-अपनी जगहपर ऐसे चिपके थे कि उनका पता ही न चला।

[illegible] बाबू साहब [illegible] नौकर [illegible]

उसने खून किया था । राजा साहबने उसे एक जब-
र्दस्त लोहेकी जंजीरमें बांध रखा था । एक दिन
वह जंजीर तोड़कर झूमता हुआ निकल पड़ा । लोग
उसको देखते ही भाग खड़े हुए । किसीकी हिम्मत
नहीं हुई कि उसे पकड़ लें । असरफअली नामक
एक बड़ा साहसी महावत था । उसने कहा कि मैं

बताओ, हाथी कहां छिपा है?

पत्रकी नकल

कानोड

प्रिय···गोपाल ! ता: १२-१२-२१

जबसे मै···आया हूं तबसे मैंने··कई··पत्र··लिखे, पर तुमने··उत्तर··नहीं दिया। तुम्हारे चुप··रहनेका कोई··कारण नहीं देखता। मैं सचित्र··विजयकी··बालपरिषद्की··प्रतियोगितामें··भाग लिया करता हूं, पर मैं तुम्हें···प्रतियोगितामें भाग···लेते नहीं देखता।···तुम्हारी भयका भूत··कहानी प्रकाशित हुई थी, पर····कभी तुम्हारा नाम नहीं देखा।

आशा है····कुशल होगे। मेरी तबियत... ठीक है। पत्रका उत्तर··देना। तुम्हारा—महादेव

पहेली नं० २१

एक राजा साहब सैर करनेके लिये किसी शहरमें गये। उनके साथ उनकी रक्षाके लिये फौजी

सिपाही थे। जिस मकानमें वे ठहरे थे उसमें न
कमरे थे। रातको राजा साहब बीचवाले कमरे
सोये और अपने सिपाहियोंको बाकी आठ कमरों
में इस प्रकार नियत कर दिया कि जिधरसे गिनें
नौ सिपाही दिखाई दें। वे प्रत्येक कमरेमें तीन
तीनके हिसाबसे रखे गये जैसा कि नीचेके चक्रमें
दिखाया गया है। राजाका इरादा वहां अधिक दिन
तक रहनेका था। इसलिये सिपाहियोंने उनसे पूछा

३	३	३
३	राजा	३
३	३	३

कि क्या हमलोग शामको एक दूसरेके कमरेमें
बातचीत करने अथवा दिल बहलानेके लिये जा
सकते हैं? राजा इस शर्तपर राजी हो गये कि हां,
तुम लोग एक दूसरेके कमरेमें बातचीत करनेके लिये

जा सकते हो, पर गिननेपर मुझे हर तरफ नौ सिपाही मिलने चाहिये। दूसरे दिन रातको सोनेके पहले राजाने घूम-घूमकर देखा कि कोई सिपाही गैरहाजिर तो नहीं है अथवा कोई बाहरी आदमी तो नहीं आया है। उन्होंने बड़ी सावधानीसे चारों ओर देखा और गिननेपर उन्हें हर ओर नौ सिपाही मिले। जब उन्हें विश्वास हो गया कि कोई सिपाही बाहर नहीं गया है तब वे सोने चले गये।

पर उस रातको चार सिपाही बाहर गये हुए थे। दूसरी रातको कोई सिपाही बाहर नहीं गया, पर उन्होंने चार आदमियोंको बाहरसे ताश खेलनेके लिये बुला लिया था। वह राजाके नियमके विरुद्ध था। पर जब राजा सोनेके पहले सिपाहियोंको गिननेके लिये आये तो उन्होंने देखा कि हर ओर नौ-नौ सिपाही हैं। तीसरी रातको आठ आदमी बाहरसे आये थे, पर इस तरह आदमियोंकी संख्या बत्तीस होनेपर भी राजाको हर तरफ नौ ही सिपाही मिले। चौथी रातको बारह आद

छा—मास्टर साहब, यह किसकी तसवीर है ?
मास्टर साहबने सीधे न कहकर घुमा-फिराकर
कहा—मेरे भाई बहिन कोई नहीं है। जिसकी यह
तसवीर है। उसका पिता मेरे पिताका लड़का है
बताओ मास्टर साहबके हाथमें किसकी तसवीर है

पहेली नं० २३

भीखन नामक एक पहेलिया रहता था। उस
की स्त्री जगदेई बड़ी लड़ाकू थी। उसके एक लड़क
था जिसका नाम था सुन्दर। एक दिन उसके गांव
में एक भालू नचानेवाला मदारी आया। भालूक
नाच देखनके लिये भीखनका लड़का सुन्दर भी
अपने घरसे दौड़ता हुआ गया। भालूको देखते
ही उसके मनमें इच्छा हुई कि मै भी भालू नचा
ऊंगा। वह मांके पास गया और कहने लगा—
मॉ. मेरे लिये एक भालू मॅगा दे। मांने कहा—
अच्छा, वेटा, अपने बाबूजीको आने दो तो उनसे
कहकर भालू मंगा दूंगी।

ठाओ। मेरा सुन्दर उसे नचायेगा। अगर चि
भालूके आओगे तो आज खाना नहीं दूंगी।

भीखन क्या करता ? उल्टे पांव वह तीर कमा
लेकर जंगलकी ओर चल पड़ा। जंगलमें भालू
बहुतेरा खोजा, पर एक भी कहीं नहीं मिला
अन्तमें जब वह निराश होकर घर लौट रहा
तब एक भालू उसे दिखाई दिया। उसने भालू
पीछा किया, पर वह भागकर कहीं छिप गया
ऊपरके चित्रमें यही बात दिखलाई गई
क्या तुम बतला सकते हो कि भालू कहां छिपा है

पहेली नं० २४

ऊपरके नौ खाने इस ढंगसे रखे गये हैं।
बीचमें तीन खाने एक साथ हैं इन तीनों खानों
बगलमें दो-दो खाने एक साथ हैं और दो
सिरोंपर एक-एक खाना है। इन खानोंमें ए
नौतक अङ्क, बेतरतीब रखे गये हैं। तुम ऐसे
कि यदि बांई ओर वाले [illegible]

उसके पासवाले जोड़े खानोंके अंकोंसे बनी हुई संख्याको गुणा कर दें तो गुणनफल बीचके तीन खानोंके अंकोंसे बनी हुई संख्याके बराबर हो जाता है। अर्थात् ७×२८ = १९६। पर दाहिनी ओर इकले खानेके अंक (५) को उसके पास जोड़े खानेके अङ्कोंसे बनी हुई संख्या [३४] गुणा करनेपर बीचके ३ खानोंके अङ्कोंसे बनी हुई संख्या [१९६] के बराबर नहीं होता। तुम इन अंकोंको इन खानेमें उलट-पुलटकर इस ढंगसे रखो कि दोनों किनारेके इकले खानोंके अंकोंसे उनके पासवाले दोनों जोड़े खानोंसे बनी हुई संख्याके गुणनफल पृथक पृथक बीचके खानोंके अंकोंसे बनी हुई संख्याके बराबर हो !

७	२	८	१	९	६	३	४	५

पहेली नं० २५

राय साहब द्वारकानाथ बी० ए० एल० एल० बी० हाईकोर्टके एक नामी वकील हैं। उनके

लड़का मोहनलाल अंगरेजोकी आठवीं क्लासमें पढ़ता है और लड़की सत्यवती आदर्श कन्या पाठ-शालाकी पांचवीं क्लासकी छात्रा है। राय साहब दोनोंके पढ़ने और दिल बहलानेके लिये 'विजय' मंगाते हैं। प्रत्येक रविवारको 'विजय' उनके पास बराबर पहुंच जाया करता है। रविवारको कचहरी बन्द रहता है, इसलिये रायसाहब उस दिन घरपर ही रहते हैं। स्कूलको छुट्टी रहनेसे मोहनलाल और सत्यवती भी घरसे बाहर नहीं जाती। रायसाहब खा-पीकर कुर्सीपर बैठ जाते हैं। इतनेमें ही डाकिया 'विजय' लेकर पहुंचता है। डाकियेको देखते ही दोनों बच्चे उससे 'विजय' छीनने लगते हैं।

'विजय' लेकर दोनों बड़े प्रसन्न होते हैं। पर थोड़ी ही देर बाद दोनोंमें महाभारत शुरू हो जाता है। बात यह है, सत्यवती कहती है कि पहले मैं 'बालपरिषद्-चित्रावली' देखूंगी और मोहनलाल कहता है कि पहले मैं 'प्रतियोगिता' देखूंगा। इसी बातको लेकर दोनों घंटों लड़ते झगड़ते हैं।

रमई, कोदई आदि उनके पांचों नौकर हैरान रहते हैं कि मालिकका चिड़चिड़ा मिजाज रविवार-को बदल क्यों जाता है। शायद कलकत्तेसे जो विजय आता है उसीकी तो यह करामात नहीं है? एक दिन नौकरोंने यह प्रस्ताव पास किया कि आओ, आगामी रविवारको चारों ओर छिपकर पता लगाया जाय कि 'विजय' में कौन ऐसी बात है जो रायसाहबके आग-बबूले मिजाजको बर्फ जैसा ठण्डा बना देती है।

बताओ, रायसाहबके पांचों नौकर कहां हैं ?

शब्द-चक्र

१	२	३
२		
३		

ऊपरसे नीचेकी ओर

—नंगा ।

—जलमें रहनेवाला एक जन्तु ।

—एक बहुमूल्य धातु ।

बाईं ओरसे दाईं ओर

१—भोजनकी एक अत्यन्त आवश्यफ वस्तु ।

२—आसमान ।

३—जहा पापी लोग मरनेपर जायेंगे ।

पहेली नं० २७

एक आदमीके साथ एक बाघ, एक बकरी और घास है । वह सबके साथ नदीके पार जाना चाहता है, पर नावपर वह अपने साथ एकसे अधिक चीज-को नहीं ले जा सकता । लेकिन यदि वह अपने साथ बाघको ले जाता है तो उसे किनारेपर बकरी और घासको छोड़ देना होगा । पर घासको बकरी खा लेगी । यदि वह घासको अपने साथ ले जाता

शब्द चक्र

१	२	३
२		
३		

ऊपरसे नीचेकी ओर — बाईं ओरसे दाईं ओर

—नंगा। — १—भोजनकी एक अत्यन्त आवश्यक वस्तु।
—जलमें रहनेवाला एक जन्तु। — २—आसमान।
—एक बहुमूल्य धातु। — ३—जहां पापी लोग मरनेपर जायेंगे।

पहेली नं० २७

एक आदमीके साथ एक बाघ, एक बकरी और घास है। वह सबके साथ नदीके पार जाना चाहता है, पर नावपर वह अपने साथ एकसे अधिक चीजको नहीं ले जा सकता। लेकिन यदि वह अपने साथ बाघको ले जाता है तो उसे किनारेपर बकरी और घासको छोड़ देना होगा। पर घासको बकरी खा लेगी। यदि वह घासको अपने साथ ले जाता

। क्या तुम बतला सकते हो आगाके चारों
ड़के कहां हैं ?

बतालो, इस आगाके चारों लड़के कहां हैं?

पर टूट पड़ा और उन्हें पकड़कर अपने घर ले आया। घर ले आकर उसने अपने नौकरसे कहा कि इन दोनों आदमियोंको कैदमें रखो। कहीं भाग न जायें। तबतक मैं और दो आदमियोंको पकड़ने जा रहा हूं। यह कहकर बाहर चला गया।

उस राक्षसके नौकरने ब्राह्मणोंको कैद तो कर दिया, पर वे अपने मंत्रबलसे कैदखानेसे बाहर निकलकर दूसरी जगह छिप रहे। शामको जब राक्षस घर लौटा तो देखा कि दोनों आदमी गायब

पहेली नं० ३२

एक दिन श्रीकृष्णजी एक पेड़के नीचे टीलेपर बैठकर वंशी बजा रहे थे। उनकी वंशीकी आवाज इतनी सुरीली थी कि सुनकर पशु-पक्षी भी मोहित

बताओ, श्रीराधा और उनकी सखियां कहां छिपी हैं ?

बताओ, इस चित्रमे कितने आदमी हैं ?

पहेली नं० ३६

एक व्यापारीको एक नौकरकी आवश्यकता थी। उसने अखबारोंमें विज्ञापन छपवा दिया जिसके उत्तरमें हजारों अर्जियां आयीं। उस व्यापारीने हजारों आदमियोंमेंसे एकको चुनकर बुलाया। सब बातें तय हो चुकनेपर जब तनख्वाहकी बात आयी तो उस आदमीने कहा कि मैं ३०) मासिक

पहन हाथमें बन्दूक ले शिकार खेलने निकले। दिन भर परेशान रहे, पर एक भी चूहा या खरगोश हाथ नहीं लगा। एक खरगोश दिखाई भी दिया तो वह शमशेर सिंहके बन्दूक उठाते ही झाड़ीमें ऐसा छिपा कि उनके लाख ढूंढनेपर भी उसकी छाया तक न मिली।

नीचेके चित्रमें शमशेर सिंह बन्दूक लिए खड़े हैं। उनका शिकार खरगोश झाड़ीमें छिप गया है क्या तुम बतला सकते हो खरगोश कहां छिपा है

शिकारीका शिकार खरगोश भागकर कहीं छिप गया है। क्या तुम बता सकते हो वह कहां है!

कर दे। इसपर थोड़ी देरतक बड़ी चहल-पहल रही। कोई जादूगरका पक्ष ले रहा था तो कोई उसका विरोध कर रहा था। अन्तमें उस जादूगरने कहा—अधिक शोरगुल करनेकी जरूरत नहीं है। मैं अभी तुममेंसे तीन आदमियोंको गुम कर देता हूं। अगर किसीमें ताकत हो तो उनका पता

तुम बतलाओ तीनों आदमी कहां छिपे हैं!

कर दे। इसपर थोड़ी देरतक बड़ी चहल-पहल रही। कोई जादूगरका पक्ष ले रहा था तो कोई उसका विरोध कर रहा था। अन्तमें उस जादूगरने कहा—अधिक शोरगुल करनेकी जरूरत नहीं है। मैं अभी तुममेंसे तीन आदमियोंको गुम कर देता हूं। अगर किसीमें ताकत हो तो उनका पता
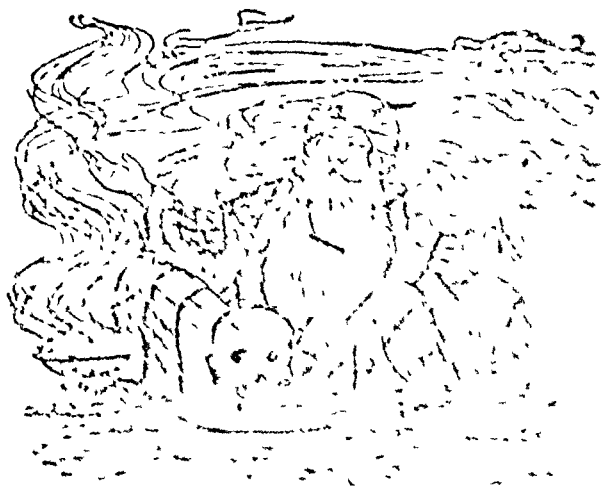
× इ × ल	एक सवारी
× घ × × ज	हिन्दी पुस्तक एजन्सीका एक पुस्तक
× × श	एक वृक्ष
× र	एक चौपाया
ह × ^	एक पक्षी
× म × ×	एक फल

पहेली नं० ४२

निम्नलिखित चक्रके खानोंके अक्षरोंको इस ढंगसे रखो कि उनसे एक सार्थक वाक्य बन जाय।

दो	धा	स
चि	न	र
त	त	ग

पहेली नं० ४३

निम्नलिखित अक्षरोंसे तुम अधिकसे अधिक जितने फल फूलोंके नाम बना सकते हो, बनाओ।

अक्षर

क ला ली मु आ ल हु ट म ट म
ले ला अ जा फा रू ं से च गु मु
न सा द ल व

पहेली नं० ४४

नीचे लिखे हुए पत्रको चित्रोंके स्थानमें उनके अर्थ बोधक शब्द देकर पूरा करो।

प्रिय [चित्र] [चित्र] !

[चित्र] पुर के [चित्र] रे

बहुत अच्छे होते हैं।

[चित्र] [चित्र] दास गांधी [चित्र]

के अवतार हैं।

तुम्हारा

[चित्र] धर प्रसाद।

इस चिट्ठीको पूरा करो।

७

चित्रको उलटकर देखो. चोर सिपाहीके दाहिने हाथपर छिपा है।

८

चित्रमें निम्नलिखित भूलें हैं—

१—घोड़ेकी दुम लम्बी है।

२—सुम फटे हुए हैं।

३—मूछ नहीं होनी चाहिए।

९

तीनो कुंजडिनोंने पहले एक पैसेके सातके हिसाबसे अपने आम वेचे। इस तरह पहलीने ७ आम एक पैसेको, दूसरीने २८ आम ४ पैसेको और तीसरीने ४९ आम ७ पैसेको वेचे। तीनोंके पास क्रमशः ३, २ और १ आम बच रहे, अब तीनोंने अपने बाकी आमोंको ३ पैसे प्रति आमके हिसाबसे वेच दिया। इस तरह तीनोंको दस-दस पैसे मिले और तीनोंने बराबर भावसे अपने-अपने आमको वेचा।

१०

१	११	६	१६
८	१४	३	९
१५	५	१२	२
१०	४	१३	७

११

…मानने जो कलण्डर लटका रहा है उसमें तारीख ३१ के स्थानमें …ना चाहिये। क्योंकि जूनका महीना ३१ दिनका नहीं होता।

१२

३	१	४	२	५	१५
१	११	३	३	७	२०
६	२	५	१३	६	३५
२	३	२०	१२	६	४५
३	८	३	१६	२५	५५
१०	२०	३५	४५	५५	

१५

४	२	५	३	१
३	१	४	२	५
२	५	३	१	४
१	४	२	५	३
५	३	१	४	२

१६

४	१	७	६
६			१०
५	८	३	२

१७

बाबूसाहब स्त्रीके अंचलके पास ही छिपे हैं। एक नौकर पेटकी जड़में और दूसरा तनेके बीचमें छिपा है। दोनों कुत्ते, स्त्रीके सामने जो छोटे-छोटे चट्टानके टुकड़े हैं उन्हींमें छिपे हैं। गौरसे घुमा फिराकर देखो।

१८

जवाहरलाल

१९

चित्रको उलटकर देखो. पेडकी दोनो बड़ी-बड़ी शाखोंके बीच हाथी छिपा है।

२०

प्रिय भाई गोपाल

जबसे मैं यहां आया हूं तबसे मैंने तुम्हें कई एक पत्र लगातार लिखे, पर तुमने किसीका उत्तर आजतक नहीं दिया। तुम्हारे चुप बैठे रहनेका कोई विशेष कारण नहीं देखता। मैं सचित्र साप्ताहिक 'विजय' की बालोपयोगी बालपरिषदकी प्रत्येक प्रतियोगितामें उत्साहसे भाग लिया करता हूं। पर तुम्हें किसी प्रतियोगितामें कभी भाग लेते नहीं देखता। पहले तुम्हारी लिखी 'भरण्य भक्त' नामक कहानी प्रकाशित हुई थी। अब कभी तुम्हारा नाम नहीं देखता।

आशा है, तुम सकुशल होंगे। मेरी तबीयत अब ठीक है। पत्रका उत्तर शीघ्र देना।

तुम्हारा भाई —महादेव

२१

पहली रात

४	१	४
१	राजा	१
४	१	१

दूसरी रात

१	७	१
७	राजा	७
१	७	१

तीसरी रात

<table>
<tr><td></td><td>९</td><td rowspan="3">९</td></tr>
<tr><td>९</td><td>राजा</td></tr>
<tr><td></td><td>९</td></tr>
</table>

चौथी रात

५		४
४		५

२७

पहले वह बकरीको ले जाकर उस पार छोड़ आयेगा। फिर इस पार आकर बाघको ले जायगा। और उसे किनारेपर रखकर बकरीको अपने साथ लेता आयगा। बकरीको फिर इस किनारेपर रखकर घास-को अपने साथ ले जाकर उस पार छोड़ आयेगा। फिर इस पार आ-कर बकरीको ले जायगा। इस तरह बारी बारीसे वह तीनों चीजोंको नदीके पार ले जायगा।

२८

भागाका एक लड़का सिरपर उसकी पगड़ीमें, एक पगड़ीकी छोरमें, एक दाढ़ीमें और एक उसके दाहने गालके पास छिपा है। ध्यानसे देखो, तब दिखाई देंगे।

२९

पहले उन्होने आमोंको एक पैसेके सातके हिसाबसे बेचा। उसके बाद जब बाजारमे आम कम हो गये तो भाव बढ़ गया। और उन्होंने अपने बाकी आमोंको ३ पैसे फी आमके हिसाबसे बेचा। इस तरह हरेकको बीस बीस पैसे मिले।

३०

चित्रको उलटकर गौरसे देखो। एक ब्राह्मण राक्षस और उसके नौकरके बीचमें है और दूसरा नोकरके कानके पास है।

३१

१ गिलहरी	५ अलवर
२ कबूतर	६ महादेव
३ लेखनी	७ रत्नागिरि
४ सरयू	८ सन्तरा

३२

राधाजी श्रीकृष्णके दहिने चरणके पास हैं। एक सखी पेड़की जड़में है। अब चित्रको उलटकर देखो, एक सखी श्रीकृष्ण और पेड़के बीचमें और एक उनकी वंशीके पास है।

३३

यह आदमी १५ फूल लेकर गया था और उसने प्रत्येक मन्दिरमें १६, १६ फूल चढ़ाये।

३४

मास्टर एम० एस० मेहताके मकानके सामने एक तालाब दिखाई दे रहा है। उसमें एक मोटर बोट डूब रहा है। मोटर बोटका ड्राइवर और उसका सवार दोनों चिल्ला रहे हैं। मेहताके मकानके दरवाजेके सामने सीढ़ियोंपर खड़ा एक आदमी उनकी मददके लिये चिल्ला रहा है। छतपर भी एक आदमी हाथ उठाये चिल्ला रहा है। मकानके पास एक हवाई जहाज उड़ता दिखाई दे रहा है।

३५

इस चित्रमें १८ आदमी हैं।

३६

उन अंगूठियोंके दाम क्रमशः १) २) ४) ८) १६) हैं।

३७

४१

१—नारियल, २—ननसरोज, ३—पराग, ४—दर, ५—टलूक
—अमरूद।

४२

सदा प्रसन्नचित रहो।

४३

फालसा, आम, महुआ, जामुन, चमेली, गुलाब अमरूद बेला।

४४

प्रिय गुलाबचन्द!

नागपुरके सन्तरे बहुत अच्छे होते हैं। श्री मोहनदास गांधी कृष्णके अवतार हैं।

तुम्हारा—
गदाधर प्रसाद

* समाप्त *

कवरके चित्रका उत्तर

बताओ तो क्या है?

कवरपर जो दोरंगा चित्र छपा है, उसे गौरसे देखो। बाईं ओर पेड़के तनेसे सटकर कुत्ता जैसा एक जानवर छिपा है। चीलके दाहिने डैने और पेड़के तनेके बीच चीलकी ही तरह एक पक्षी और उसके बायें डैने और टहनियोंके बीच एक स्त्री छिपी है। चीलके दोनों डैनोंके बीच एक बुढ़ा आदमी है। चित्रको घुमा फिराकर देखो, सब साफ़ साफ दिखलाई देगें।

Written Strictly according to New Syllabus.

সাহিত্য-মঞ্জরী

দ্বিতীয় ভাগ

চতুর্থ শ্রেণীর (Class IV) পাঠ্য।

পণ্ডিত রামদয়াল চট্টোপাধ্যায়

স্কুল লাইব্রেরী
২২নং ওয়েলিংটন ষ্ট্রীট,
কলিকাতা।